स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रीयता सम्बन्धी विचार

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ.प्र.)

शोध सारांश

जस समय राष्ट्र उदासीनता, निष्क्रियता और निराशा में डूबा हुआ था, उस समय स्वामी विवेकानन्द ने शक्ति तथा निर्भयता के संदेश की गर्जना की। आपने लोगों को शक्तिशाली बनने की प्रेरणा दी। शक्ति ही स्वामी विवेकानन्द की भारतीय राष्ट्र की वसीयत है। तत्कालीन समस्याओं एवं व्यक्तित्व निर्माण के लिए स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए केवल करना शेष रह जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि जीवन में एक ही लक्ष्य साधो और दिन– रात उस लक्ष्य के बारे में सोचो और फिर जुट जाओ उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए। हमें किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए। प्रयत्न करते रहो, जब तुम्हें अपने चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखता हो, तब भी मैं कहता हूँ कि प्रयत्न करते रहो ! किसी भी परिस्थिति में तुम हारो मत,बस प्रयत्न करते रहो! तुम्हें तुम्हारा लक्ष्य जरूर मिलेगा ,इसमें जरा भी संदेह नहीं। स्वामी विवेकानन्द अक्सर कहा करते थे कि आदर्श को पकड़ने के लिए सहस्त्र बार आगे बढ़ो और यदि फिर भी असफल हो जाओ तो एक बार नया प्रयास अवश्य करो। इस आधार पर सफलता सहज ही निश्चित हो जाती है।

Key Words: *स्वामी विवेकानन्द ,धर्म,प्रेरणास्पद विचार,संसार,राष्ट्रीयता ।*

स्वामी विवेकानन्द का कहना है कि मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने किसी राष्ट्र को सहिष्णुता तथा स्वीकृति दोनों की ही शिक्षा दी है। हम लोग केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते वरन् समस्त धर्म सत्य मानते हैं। मुझे आपसे कहने में गर्व है कि मैं ऐसे धर्म का अनुयायी हूँ जिसकी पवित्र भाषा संस्कृत है, मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि जिस वर्ष यहूदियों का मन्दिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया था उसी वर्ष यहूदियों के एक अंश को जिसने दक्षिण भारत आकर उसी वर्ष शरण ली थी, अपने हृदय में स्थान दिया था। मैं उस धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूं जिसने महान जरथुष्त्र जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह आज भी कर रहा है।

जिस प्रकार संगीत में एक प्रमुख स्वर होता है, वैसे ही हर राष्ट्र के जीवन में एक प्रमुख स्वर होता है, जैसे ही हर राष्ट्र के जीवन में एक प्रधान तत्व हुआ करता है, अन्य सब तत्व उसी में केन्द्रित होते हैं । भारत का वह तत्व है–धर्म। एक बार पुनः भारत को विश्व की विजयी करनी है, उसे पश्चिम की आध्यात्मिक विजय करनी है। स्वामी विवेकानंद पश्चिम के अंधानुकरण के

विरोधी थे, जिस प्रकार पढ़े–लिखे भारतीयों ने पश्चिमी शिक्षा और संस्कृति को अपनाया उससे वे व्यथित थे। वर्तमान समय में भी शिक्षित मध्यम ,उच्च एवं युवा वर्ग पश्चिम का अंधानुकरण करने में लगा है जिससे भारतीय संस्कृति की पहचान पतन की ओर निरंतर जा रही है। स्वामी जी मानते थे जब तक इस अंधानुकरण को रोका नहीं जाएगा तब तक भारत को एक नया भारत नहीं बनाया जा सकता है।

आज भूमण्डीकरण के युग में पूरा विश्व एक गॉव की तरह हो गया है सूचना संचार की तकनीकी ने सभी राष्ट्रों को आपस में जोड़ दिया है। विवेकानन्द आज से ए सौ पचास वर्ष पहले ही यह स्वीकार करते थे कि राष्ट्रीय आदर्शों तथा विश्वव्यापी एकता अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति तथा आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा ही सम्भव हो पायेगी अर्थात आपका अन्तर्राष्ट्रीय बाजारवाद का न होकर आध्यात्मिक था। अन्तर्राष्ट्रवाद के आधार में स्वामी विवेकानन्द ने तीन प्रमुख आधारों को स्वीकार किया। (i) ज्ञान का आदान प्रदान (ii) राष्ट्रों में अन्तरता (iii) भारत के आध्यात्म द्वारा विश्व का नेतृत्व।

विवेकानन्द ने मानवता को बनाए रखने के लिये भारत के आध्यात्मिक नेतृत्व को स्वीकार करते हैं। आज हम देखते हैं कि विज्ञान ने जहॉ हमें चॉद, सितारों तक पहुँचा दिया है, वहीं आज विश्व में परमाणु जखीरों से भरा पड़ा है जिससे की पूरी मानवता का विनाश कुछ क्षणों में सम्भव हो सकता है ऐसे में विश्व में शान्ति तथा मानवता की सुरक्षा हेतु आध्यात्मिक शक्ति की परम आवश्यकता है। आपने आध्यात्मवाद तथा भौतिकवाद में समन्वय को स्वीकार किया है।

स्वामी विवेकानन्द ने अपने विचार से युवाओं में शक्ति और स्फूर्ति का संचार भर दिया था। आपके जन्म दिवस 12 जनवरी को 'युवा दिवस' के रूप में मनाया जाना इस बात का द्योतक है कि आज भी युवाओं को सही दिशा दिखाने में आपके विचार सार्थक हैं। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि – 'उठो, जागो और लक्ष्य को प्राप्त करने तक मत रूको', इन वाक्यों से युवाओं में प्राणवायु का संचार होता है आत्मबल तथा विश्वास सफलता हैं। इनका यह भी मानना था कि देश के विकास में युवा शक्ति को आगे आना होगा। विवेकानन्द का सम्पूर्ण जीवन ही युवाओं हेतु एक आदर्श है जो हमे जीवन जीने की कला सिखाता है। इनका स्वयं का मानना था कि 'सतत् प्रतिकूल स्थिति श्रृंखलाओं के विरूद्ध आत्मप्रकाश और आत्मविकास की कोशिशों का नाम जीवन है। सन् 1893 ई0 में विश्व धर्म सम्मेलन में उन्होने भारतीय संस्कृति तथा अस्मिता का परचम लहराया तथा भारतीय मेधा को दुनिया के सामने रखा।

स्वामी विवेकानन्द ने महत्वाकांक्षा को अपने हित की आकांक्षा से न जोड़कर महत आकांक्षा अर्थात समाजहित, देश हित और मानवहित की आकाक्षां में देखा। आज को देखकर जो भौतिकवाद तथा प्रतिस्पर्धा युग में जी रहे हैं, उन्हें स्वामी विवेकानन्द के आदर्शवादी महत्वकांक्षा से जुड़ना होगा तभी वह देश में अपना योगदान दे पायेगा। स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं से कहा था कि 'तुम्हारा जन्म ही इसलिये हुआ है कि तुम अपने में विश्वास रखो महान आत्मविश्वास से महान कार्य सम्पन्न होते हैं'। निरन्तर आगे बढ़ते रहो। स्वामी विवेकानन्द ये वाक्य आज भी इतने स्फूर्ति भरे हैं कि युवाओं की शक्ति सही दिशा में ले जाने में प्राणवायु का कार्य कर सकते हैं। आपका यह मानना कि समय और स्थितियों से हार मानने के बजाय लड़ना चाहिये, यह प्रेरणास्पद विचार हैं। युवाओं में शक्ति का संचार तो स्वाभाविक रूप से होता है किन्तु स्वामी विवेकानन्द के शक्तिदायी विचार उन्हें और ऊर्जावान बना देने में समर्थ हैं तथा राष्ट्र की प्रगति से जोड़ने में सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं।

संदर्भ ग्रथ सूची

- चौबे, प्रो0 एस0पी0, आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2010
- पाण्डेय, प्रो0 रामशकल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2008
- जैन, प्रदीप कुमार, विद्यामेद्य, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि0, प्रेस यूनिट, टी0 पी0 नगर, मेरठ ,2009
- स्वामी विवेकानंद का शिकागो में धर्म सम्मलेन भाषण ,११ सितम्बर १८९३
- शर्मा डॉ0 योगेंद्र,भारतीय राजनीतिक चिंतन,डा0 सी0 एल0 बघेल, अलका प्रकाशन, कानपुर 2005
- सिंह, डॉ0 ओ0 पी0,शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2012
- जैन, प्रदीप कुमार, विद्यामेद्य, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि0, प्रेस यूनिट, टी0 पी0 नगर, मेरठ ,2009
- सिंह, डॉ0 कर्ण ,विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर–खीरी,2011–12
- स्वामी विवेकानंद का शिकागो में धर्म सम्मलेन भाषण ,११ सितम्बर १८९३
- झा, राकेश कुमार, योजना, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, जनवरी 2010, जनवरी 2013